रूहानी सत्संग No. K-03

घर रहो रे मन मुग्ध अयाणे

(1) घर रहो रे मन मुग्ध अयाणे, राम जपो अंतरगत ध्याणे॥

हम अपने आपको भूल गये हैं। अपनी चेतनता को भूल गये हैं। हमें यह खबर नहीं कि हम शरीर हैं या शरीर के स्वामी। हम मन-इन्द्रियों के अधीन होकर बाहरमुखी दुनिया में फैल रहे हैं। मन का रुख यदि इन्द्रियों की ओर होगा तो वह बाहर फैलेगा। यदि इसका रुख आत्मा की ओर होगा तो इसे अपने आपकी सूझत होगी, अपनी चेतनता की सूझत होगी। केवल इसका रुख बदलने की आवश्यकता है। यदि इसका रुख इन्द्रियों की ओर हो और यह फैलाव में रहे तो इसका नतीजा क्या होगा?

जहाँ आसा तहां वासा

जहाँ Attachment (मोह) हो, जहां लगन लग जाये बार-बार वहीं जायेगा। यह जन्म-मरण का चक्कर, इसका संसार में आना जाना बना रहेगा। सो फरमाते हैं श्री गुरु नानक साहिब कि ऐ मूर्ख मन, तू अपने घर रहना सीख। जब तक यह बाहर भटक रहा है, आत्मा भी इसके साथ बाहर भटक रही है। आत्मा चेतन है। मन जड़ है। आत्मा अकर्ता है, अभोगता है, अजन्मा है। मन के साथ लगकर, जो जड़ है, यह भी जड़ बन जाती है। फिर यह कर्ता भी है, अकर्ता भोगता भी है। यदि आत्मा को मन के पंजे से आज़ाद कर दिया जाये, यह मन से अलग हो जाये तो फिर यह आज़ाद है, नहीं तो इसे जन्म-मरण के चक्कर में बंधना पड़ता है। जड़ का खासा है कि उसका रुख नीचे की ओर होता है।

मिट्टी के ढेले को कितनी ही ताकत से ऊपर की ओर फैंको वह नीचे ही गिरेगा। बत्ती को जलाकर उलटा भी कर दो तो भी उसकी ज्योति का रुख ऊपर ही रहेगा। आत्मा चेतन्य है। यदि आत्मा मन से, जो जड़ है, अलग हो जाये तो वह आज़ाद होते ही अर्श (आकाश) की ओर उड़ जायेगा। मौलाना रूम फरमाते हैं:

आं तोई के बेबदन दारी बदन पस मतरस अज जिस्मोजाँ बेरूँ शुदन

तू वह है जिसका इस शरीर के अतिरिक्त और शरीर भी है। इसलिए इस शरीर से निकलने से मत डर। फिर फरमाते हैंः

अर्शेस्त नशेमने तो शरमत बादा कानीओ मुकीमी खसो खाशाक शवी

तेरे रहने का स्थान अर्श है। कहां की तू रहने वाली और कहां मिट्टी में तू रुल रही है परन्तु इस बात का अनुभव तब पैदा हो यदि यह बाहर भटकना छोड़ दे। इसलिए गुरु नानक साहब उपदेश दे रहे हैं कि ऐ मन, तू बाहर भटकना छोड़ दे। गुरुबाणी में आया हैः

नौ घर ठाके धावत रहाये, दसवें निज घर वासा पाये॥
ओथे अनहद शब्द वज्जे दिन राती गुरुमती शब्द सुर्णावणेया॥

ये नौ दरवाज़े, जिनसे हम बाहर दुनिया में फैल रहे हैं दो कान, दो आँखें, दो नासिका, मुंह और दो नीचे की इन्द्रियाँ, इन मार्गों से बाहर फैलने की प्रवृत्ति को रोके और दसवां जो गुप्त मार्ग है निज घर जाने का, उस मार्ग में प्रवेश करे तो वहां प्रकाश भी है और ध्वनि भी है। सो परमार्थ की अलफ, बे तब आरम्भ होती है जब मन बाहर से हटकर अंतर्मुख हो। आत्मा भी तभी ठहरेगी क्योंकि दोनों मिले जुले हैं। मन में रात-दिन कामनाओं (भावनाओं) की लहरें उठ रही हैं।

मन समुद्र लख न पड़े, उठे लहर अपार॥

मन रूपी समुद्र में हर समय अनगिनत लहरें उठ रही हैं, कभी काम, कभी क्रोध, कभी लोभ, मोह, अंहकार के प्रबल वेग चल रहे हैं। जब तक ये वेग (लहरें) बंद न हों, मन बाहर फैलाव में भटकने से रुककर अंतर में खड़ा न हो, उस समय तक हकीकत की झलक नहीं मिलती। जैसे एक प्याला हो। उसमें कई सुराख हों जिनसे हवा अंदर जा रही हो। प्याले में मैला पानी भरा हो, जिससे बाहर से आने वाली हवा के ज़ोर से बुलबुले उठते हों। इस पानी में यदि आप अपना मुख देखना चाहें तो क्या वह दिखाई देगा? पहली बात यह है कि बाहर से हवा के आने के जो मार्ग हैं, उन्हें बंद करो, पानी खड़ा हो जायेगा। फिर उसमें फिटकरी डाल दो जिससे मैल छंट जाये। अब उस पानी में मुख स्पष्ट दिखाई देगा। मन रूपी प्याला है। इन्द्रियाँ उसके सुराख हैं जिनसे दुनिया की हवा अंदर आ रही है। आँखों से, कानों से, स्पर्श की इंद्री से अंतर में मैल जा रही

है। पांच ज्ञान इन्द्रियाँ और पांच कर्म इन्द्रियाँ हैं जिनसे संस्कार आते हैं। इस प्याले में आगे ही मैला पानी भरा है (जन्म-जन्मांतर के संस्कार आगे ही भरे पड़े हैं और नये संस्कार आ रहे हैं)। इसकी मैल छांटने का उपाय, वह फिटकरी जिससे मैल छंट सकती है केवल नाम है और घट-घट में वह अंतर की मैल छांटने वाला नाम मौजूद है। उपनिषद में आया है, "इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होता है।" श्री गुरु नानक साहब ने जपुजी साहिब में इसका निर्णय किया है। फरमाते हैं:

भरिये हत्थ पैर तन देह॥ पानी धोते उतरस खेह॥

हाथ, पांव, शरीर यदि मिट्टी से भर जायें, तो पानी से साफ हो जाते हैं।

मूत पलीती कप्पड़ होय॥ दे साबण ओह लईये धोये॥

कपड़ों में गंदगी लग जाये तो उन्हें साबुन से धोकर साफ किया जा सकता है। अंत में फरमाते हैं:

भरिये मत पापाँ के संग॥ ओह धोपे नावें के रंग॥

मन में जन्म-जन्मांतर के जो संस्कार चले आ रहे हैं, जो मैल इकट्ठी हो रही है, उसे धोने का उपाय केवल नाम है। सो पहला उपदेश श्री गुरु नानक साहब यह देते हैं कि मन को बाहर भटकने से रोको, उसे अंतर में खड़ा करो।

नौ घर देख जो कामण भूली वस्त अनूप न पाई॥

आत्मा जो नौ द्वारों से बाहर भटक रही है, वह उस अनूप वस्तु से, उस अनमोल चीज़ से, बेखबर है जो उसके अंतर में है। वह अनूप वस्तु है परमात्मा परिपूर्ण। उसे नाम या शब्द भी कहा है, वह God in action power (करण-कारण प्रभु पावर) है। यदि यह बाहर से हट-हटाकर अन्तर्मुख हो तो उससे संबंध पैदा हो। सो फरमाते हैं, ऐ मन मूर्ख, तू अपने घर रहना सीख, बाहर भटकना छोड़। मन जड़ है। उसका खासा है भेड़ चाल। जो काम वह बीस बार करेगा यह उसका स्वभाव बन जायेगा। कहते हैं तू मूढ़ है। स्वाभावानुसार यदि एक काम करता है तो किये जाता है। तुझे इस काम के लाभ और हानि की खबर नहीं। मन इस शरीर रूपी मोटर का ड्राइवर है। यदि ड्राईवर ठीक न हो तो मोटर अवश्य टकरा जायेगी।

तो पहला उपदेश श्री गुरु नानक साहब यह दे रहे हैं कि मन तू घर में रहना सीख, तभी तुझे अपनी होश (सुध) आयेगी। फिर कहते हैंः

राम जपो अंतरगत ध्याणे॥

कि तेरे अंतर जो राम है, जो रम रहा है, जो घट-घट में रमा हुआ है, अगर तू बाहर से हटेगा तभी उसे जप सकेगा। वह परमात्मा परिपूर्ण, वह नाम, शब्द वह Divine link घट-घट में व्यापक है परन्तु उसके साथ लगने के लिये इन्द्रियों से हटना पड़ेगा। आत्मा और मन दोनों का ठिकाना एक है। दो भ्रूमध्य नासिका का अग्रभाग (दो आँखों के मध्य नाक की सीध में) यह ठिकाना इन्द्रियों से ऊपर है। यहाँ आने के लिए इन्द्रियों से अवश्य ऊपर आना पड़ेगा। बाहर से हटकर अंतर इस स्थान पर ठहरे तो सूझत आये। बाहर धूप से चलकर मनुष्य अंदर कमरे में आए तो धूप से चुंधियाई हुई उसकी आँख को कुछ भी दिखाई नहीं देता। यदि थोड़ी देर अंदर टिक जाए तो वही सब वस्तुएँ दृष्टि में आने लगती हैं। अंतर में परमात्मा परिपूर्ण है, उसकी ज्योति भी है और ध्वनि भी अंतर में हो रही है। बाहर से हटो, अंतर टिको तो हमारी आंख वास्तविकता को पकड़ेगी। बाहर के दृश्यों को देखकर चुँधियाई हुई आँखें जब अंदर टिकेंगी और Adjust हो जाएंगी तब सब कुछ अंतर में दिखाई देगा। परमार्थ की वास्तविकता (राज़) यही है। बुल्लेशाह को सांई इनायत शाह ने यही राज़ यों समझाया थाः

सांई दा की पावणा एधरों पट्टणा ते उद्धर लावणा।

केवल रुख बदलने की बात है। बाहर से ध्यान हटाकर अंतर में टिकाओ, बस और कुछ नहीं करना तुम्हें। यदि कोई ऐसा महात्मा मिल जाए जो इस साईंस को जानता हो तो वह थोड़ी सहायता भी करेगा और उभार भी देगा। तुम अंतर में टिक जाओगे। बाहर इन्द्रियों का जितना भी ज्ञान है, वह सब दृश्य का ज्ञान है। जब बाहर से इन्द्रियों को उलटोगे और अंतर ठहरोगे, तभी उस राम से, उस रमी हुई शक्ति को, जो कण-कण में व्यापक है, जो घट घट में व्यापक है, तुम उसे जान सकोगे, उससे संबंध स्थापित कर सकोगे। गुरु नानक साहब ने शुरू की कड़ी में राज़ की बात कह दी है। आगे इस विषय को विस्तार पूर्वक खोलकर कहते हैंः

(2) लालच छोड़ रचो अपरंपर इयों पावो मुक्त द्वारा हे॥

मन खड़ा कैसे हो? इन्द्रियाँ भोगों का लालच छोड़ें, तभी यह अंतर में टिक सकेगा। इन्द्रियाँ इसे हर समय बाहर खींचे फिरती हैं। आँख की इन्द्री सुन्दर रूप देखने में, कान सुहाने राग सुनने में, जिह्वा की इन्द्री स्वादिष्ट भोजनों में, यह सब इन्द्रियां मन को हर समय बाहर खींचे फिरती हैं। एक इन्द्री के भी अधीन होने का परिणाम है, मृत्यु या सर्वदा का बंधन। पतंगे को केवल देखने का विषय है, जिसके कारण वह जल मरता है। हिरण कितना तीव्रगामी पशु है। घोड़ा भी उसकी दौड़ को नहीं पकड़ सकता। पंद्रह गज की एक छलांग लगाता है। शिकारी उसे पकड़ने के लिए ढोल बजाते हैं। कान की इन्द्री के अधीन वह ढोल की आवाज़ से मस्त होकर सारी आयु का बंधन स्वीकार करता है। मछली को जबान का विषय प्रबल है। शिकारी खाने की वस्तु कांटे में लगा देते हैं। वह कांटा भी साथ निगल जाती है और पानी से बाहर तड़प-तड़प कर मर जाती है। भंवरे को नाक की इन्द्री प्रबल है। हाथी को स्पर्श की इन्द्री प्रबल है। जंगल में हाथी को कोई पकड़ नहीं सकता। शिकारी गड्ढा खोदकर उसको घास-फूस से ढांप देते हैं। स्पर्श के विषय में चूर हाथी भागा-भागा आता है और गड्ढे में गिर जाता है। एक-एक इन्द्री का विषय इतना प्रबल है कि उसके कारण मृत्यु या सारी उम्र की गुलामी स्वीकार करनी पड़ती है। फिर जिसे पांचों इन्द्रियां घसीटे फिरें उसका परिणाम क्या होगा? गुरबाणी में आया है:

एते रस शरीर के, कै घट नाम निवास॥

बाहर इन्द्रियों के रसों-भोगों में जो लंपट हैं उनके लिये नाम कहाँ और परमात्मा कहाँ ! इसलिए कहते हैं:

लालच छोड़ रचो अपरंपर

इन्द्रियों के भोगों-रसों का लब लालच छोड़ दो। तुम भोग नहीं भोग रहे, भोग तुम्हें भोग रहे हैं। इच्छाओं से हटो। महात्मा बुद्ध भी यही कहते हैं:

"Be desireless"

बाहर से हटने का प्रश्न है। बाहर के रसों और भोगों का लब-लालच छोड़ोगे तभी अंतर में मन खड़ा होगा। बच्चा उस समय तक खिलौना नहीं

छोड़ता जब तक उसके बदले कोई और वस्तु उसके हाथ में न दी जाए। मन जड़ है, मूर्ख है। इससे बाहर के भोग छुड़ाने हैं तो अंतर में कोई वस्तु देनी पड़ेगी। बच्चे को अंधेरी कोठरी में बंद कर दो तो वह रोता है, चिल्लाता है, दरवाज़ा पीटता है परन्तु यदि उसे खिलौना दे दिया जाए तो वह चुप हो जाता है। पूर्ण महात्मा युक्ति के साथ-साथ अंतर में थोड़ा अनुभव भी करवा देते हैं। परमात्मा ज्योतिस्वरूप है। अंतर में उसकी ज्योति है। इसके साथ ही ध्वनि भी है जो हर समय आठों पहर हो रही है। महात्मा इसका थोड़ा अनुभव अंतर में देते हैं। बुद्धि विचार से मन वश में नहीं आता। ऋषियों, मनियों ने सैकड़ों वर्ष तप किया तो भी मन वश में नहीं आया। इतिहास उन दृष्टांतों से भरे पड़े हैं। अपनी हालत ही देख लो। [illegible] प्रभु से प्यार भी लगाया तो बाहर से। अंतर में दुनिया बस रही है। मनुष्य को Sincere (सच्चा) होना चाहिए। जो बात लोगों को बताए, उस पर आप भी अमल करे। यदि प्रभु को पाना है तो नेक-नियती और मन की स्वच्छता पहली शर्त है। सो पहले फरमाया [illegible] गुरु नानक साहब ने कि बाहर से हटो और अंतर टिको। बाहर से हट नहीं सकते जब तक इन्द्रियों के भोगों-रसों का लब लालच नहीं छोड़ोगे। मुक्ति पाने का यही उपाय है कि मन जो बाहर दौड़ रहा है उसे अंतर में मोड़ो। यह जो बाहर भोगों में दौड़ता फिरता है इसे अंतर्मुख करो जैसे मैंने अभी मैले पानी से भरे हुए प्याले का उदाहरण दिया है। लोग पूछते हैं मुक्ति कैसे मिलती है? इस एक कड़ी में उसका उत्तर दे दिया है [illegible] गुरु नानक साहब ने [illegible] 'करो और करके देखो'।

मेरे अपने जीवन की घटना है। मैं उन दिनों नौवी जमात में पढ़ता था। दरबारी लाल एक बूढ़ा नास्तिक था, परन्तु मस्त। एक बार पेशावर के शाही बाग में खड़ा मुझसे पूछने लगा, "शाही बाग किधर है?" मैंने कहा, 'यही है'। उसने कहा, "यहां तो वृक्ष खड़े हैं, यह शाही बाग कहां है?" मैंने उससे पूछा, "तुम क्या साधन करते हो?" कहने लगा, "यहां दो भ्रूमध्य अंतर में बैठने से बड़ा सुख है।" कुछ भी करो यहां अंतर में दो भ्रूमध्य टिक कर बैठो, तुम्हें ठंडक मिलेगी। नास्तिक भी यहां बैठता है तो आंनद का अनुभव करता है। [illegible] गुरु नानक साहब की वाणी में

फिलासफी भरी पड़ी है। खोल-खोलकर, उदाहरण दे देकर एक विषय का वर्णन करते हैं। वाणी हम खाली पढ़ लेते हैं। पढ़ो और समझो कि वह कहता क्या है। कितनी सुंदरता से वर्णन कर रहे हैं इस विषय को।

(3) जिस बिसरिए जम जोहण लागे॥
सब सुख जाएं दुखां फुनि आगे॥
(4) राम नाम जप गुरुमुख जियड़े एह परम तत्त विचारा हे॥

अब प्रश्न उठता है, हम राम को क्यों जपें? हमें क्या लाभ होगा? जैसे किसी को परिश्रम करने को कहो तो वह पूछता है कि मुझे क्या मिलेगा। यदि उसे कहो कि तुम्हें बदले में दो रुपये मिलेंगे तो वह सुबह से शाम तक परिश्रम करता है। गुरु नानक साहब कहते हैं कि यदि बाहर से नहीं हटोगे और अंतर में उस अपरंपर से नहीं लगोगे तो यम के राज्य में रहोगे। तुम्हारा आना-जाना लगा रहेगा, जन्म-मरण के चक्कर में रहोगे। यदि इन्द्रियों से अतीत होकर अंतर में नाम का रस लोगे तो बाहर के सारे रस फीके पड़ जाएंगे। फिर तुम्हें जन्म-मरण के चक्कर में लाने वाला कौन है? परन्तु यदि यह काम नहीं करोगे तो फिर यमों के हवाले होना पड़ेगा। उसके साथ यह भी होता है कि सारे सुख समाप्त हो जाते हैं और दुख उसे घेरे रहते हैं। संसार दुखों का घर है।

नानक दुखिया सब संसार।

पूछा, ''कोई सुखी भी है?'' कहने लगे, ''हां है।''

सो सुखिया जिस नाम आधार॥

हम दुखी क्यों हैं? हमारे दुखी होने का कारण यह है कि प्रभु ने जो वस्तुएं हमारे बरतने के लिए बनाई हैं उन्हें हम भोगने लग गए और जो वस्तुएं भोगने के लिए बनाई उनका केवल वर्णन मात्र रह गया है हमारी जिह्वा पर। हमारी आत्मा ने अन्तर में परमात्मा परिपूर्ण का भोग लेना था परन्तु हमने ग्रंथों-पोथियों को प्रमाण कर लिया और बस। शरीर और इन्द्रियां हमें बरतने के लिए मिली थीं। हमने उन्हें भोग भोगने का साधन बना लिया। आत्मा ने परमात्मा का भोग भोगना था परन्तु वह मन के

अधीन होकर इन्द्रियों के भोगों में फंस गई। सो श्री गुरु नानक साहब फरमाते हैं कि बाहर से हटकर अंतर में राम के संग लगो, यही मुक्ति का मार्ग है। नाम, God in action power वह रमी हुई शक्ति है जो सारे खंडों ब्रह्माडों को धारण किए हुए है। इसका आगे कई बार निर्णय हो चुका है। यहां विस्तारपूर्वक वर्णन करने का समय नहीं, न इस शब्द का यह विषय है। संक्षेप में नाम वह शक्ति है जो सारी सृष्टि के बनाने वाली और उसकी प्रतिपालक और वास्तविक आधार है। संतों ने उसे शब्द और वाणी करके भी वर्णन किया है। गुरबाणी में आया है:

शब्दे धरती शब्द आकाश। शब्दे शब्द भया प्रकाश॥
सगली सृष्टि शब्द के पाछे। नानक शब्द घटोघट आछे॥

एक और स्थान पर इसकी तारीफ यों की है:

नामे ही ते सब जग होआ।

नाम वह शक्ति है जिससे सारा ब्रह्मंड पैदा हुआ। वेदों-शास्त्रों में इसे श्रुति, आकाशवाणी, उदगीत, नाद करके ब्यान किया है और कहा है कि नाद से 14 भवन बने। मुसलमानों के धर्म-ग्रंथ में इसे कलमा कहा है। कलमें से 14 तबक बने, नाद से 14 भवन बने। बात एक ही है। ईसाईयों ने इसे Word कहा है। पार्सियों के धर्म ग्रंथ में इसे सरोशा कहा है। एक ही रमी हुई घट-घट व्यापी शक्ति का बोध कराने वाले ये सारे नाम हैं। सो गुरु नानक साहब कहते हैं कि जो रमा हुआ नाम तुम्हारे अंतर में है उससे लगो। कैसे लग सकोगे उससे? जब गुरुमुख बन जाओगे। गुरुमुख कौन है?

जो गुरु सेती सन्मुख होय।

जिसने कभी अनुभवी पुरुष के दर्शन ही नहीं किए वह गुरुमुख कैसे हो सकता है? आजकल हम लोग हर मनुष्य को गुरमुख कह देते हैं। गुरमुख वह है जो मन इन्द्रियों के अधीन नहीं, गुरु के अधीन है। सो कहते हैं गुरु नानक साहब कि जब तक यह इन्द्रियों के घाट पर बाहर संसार में फैल रहा है तब तक इसे अंतर में नाम का, उस Divine link का संपर्क नहीं मिलता जो इसके अंदर व्यापक है।

जिच्चर एह मन लहरी विच है, हौमें बहुत हंकार॥
तिच्चर शब्दे साद न आयो, नाम न लगो प्यार ॥

जब तक मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के वेग चल रहे हैं, जब तक यह बाहर से हटकर अंतर खड़ा नहीं होता, उस समय तक इसे अंतर में शब्द का रस नहीं आता। जिसका रस नहीं लिया उससे प्यार कैसे हो सकता है? इन्द्रियों के भोगों-रसों से हटो, अंतर में खड़े हो जाओ। गुरु अंतर्मुख नाम का Contact (संपर्क) देता है, उससे जोड़ देता है। उसमें महारस है। उस रस को पाकर बाहर के रस फीके पड़ जाते हैं। गुरु नानक साहब फरमाते हैं कि यह सबसे ऊंचा विचार है। हम सब सुखी होना चाहते हैं। हर मनुष्य यही चाहता है। उसका नियम यह है कि बाहर से हटो और अन्तर्मुख होकर नाम से जुड़ो। यह सार है। यहाँ सब दुखी हैं। कोई मन कर के दुखी है, कोई तन करके दुखी है। भाई कोई सुखी भी है इस दुनिया में ? महात्मा कहते हैं हां है :

सुखी संत का दास।

जो अनुभवी पुरुष के चरणों में आ गया, जो उसका हो रहा, उसे कोई चिन्ता नहीं। उसके पास औषधि है सारे दुख दूर करने की। जो अनुभवी पुरुष के चरणों में आ गया वह तो बाहर की तपिश से हटकर हरे दरख्त की छाया में आ गया और उसे अपने आपकी होश आ गई। फिर उसके पास नाम की औषधि है जिसके विषय में कहा है:

सर्व रोग को औखध नाम।

अनुभवी पुरुष के पास जाने से क्या मिलता है? स्वामी जी महाराज (स्वामी शिवदयाल सिंह जी महाराज) फरमाते हैं:

तुरत मिलावें नाम से उन्हें मिले जो कोय।

नाम अक्षर नहीं। नाम खंडों ब्रह्मंडों को बनाने वाली पावर है, वह शक्ति जो सारी सृष्टि को लिये खड़ी है। अनेकों नाम उस शक्ति का बोध कराने वाले हैं। गुरु उस नाम पावर का अंतर में सम्पर्क देता है। जो उससे लग गए उनके सारे दुख दूर हो गए, उनका जन्म-मरण का चक्कर समाप्त हो गया। वे जीवन में भी सुखी हैं, मर कर भी सुखी हैं।

कहते हैं, यह सबसे ऊँचा विचार है। आगे एक-एक कड़ी में एक-एक विषय को बड़ी सुंदरता से वर्णन करते हैंः

(5) हर हर नाम जपो रस मीठा। गुरमुख हर रस अंतर डीठा॥

पहले दो बातें बताईं कि अंतर नाम से लगने से क्या मिलता है। अब थोड़ा और वर्णन करते हैं। फरमाते हैं कि इसमें बड़ा भारी रस है और इसमें निजानंद है।

बिखे बन फीका त्याग री सखिए नाम महारस पियो॥

वह सबसे ऊँचा रस है। परमात्मा आनंद का समुद्र है। आत्मा उस महा चेतन्य समुद्र की बूंद है। यह भी आनंद स्वरूप है। जब यह इन्द्रियों के घाट से हटेगा, बाहर फैलाव से हटकर अंतर में खड़ा होगा तो यह निजानंद को अनुभव करेगा। यदि एक बार यह इन्द्रियों से ऊपर आ जाए तो बाहर संसार के रस फीके पड़ जाते हैं।

जब ओह रस आवा एह रह नहीं भावा॥

सो कहते हैं अंतर में नाम से लगो। हरि नाम जपो, तुम्हें महारस मिलेगा।

मौलाना रूम एक स्थान पर फरमाते हैंः

"हे प्रभु ! तेरा नाम इतना मीठा है कि जब मैं तेरा नाम लेता हूँ तो मेरा रोम-रोम शहद से भर जाता है।"

बाबा फरीद कहते हैंः

शक्कर, खंड, निवात, गुड़ माख्यों माझा दुध॥
हबू (सभी) वस्तु मिट्ठियां, सांई न पुज्जण तुध॥

हर मनुष्य अपनी सीमा के मुताबिक एक चीज़ का वर्णन करता है। बाबा फरीद फरमाते हैं, शक्कर, खांड, मक्खन यह सभी पदार्थ पीठे हैं परन्तु जो मिठास तुझ में है, हे प्रभु ! वह संसार की किसी वस्तु में नहीं। संसार में हम जो भी कुछ करते हैं उसका मतलब यही है कि रस मिले। प्रभु की याद में बड़ा भारी रस है। हरिद्वार में बंदर कपड़ों की पोटली उठाकर ले जाता है तो लोग उसे चने देते हैं। वह कपड़ों को छोड़ देता है। जब तक कोई दूसरा उससे बड़ा रस उसे न दो वह उस रस को छोड़ता नहीं। सो फरमाते हैं गुरु नानक साहब कि ऐ मन ! तेरे अंतर में महारस है। इन्द्रियों के भोगों के रस

इसके सामने तुच्छ हैं। इस रस को पाकर संसार के सारे रस छूट जाते हैं। गुरु रामदास फरमाते हैं कि समुद्रों के सारे मोती, पहाड़ों के सारे रत्न और संसार की सारी जायदादें इकट्ठी करके रख दी जाएं तो जो हरि का रस पा चुका है उससे पूछा जाए कि यह लेगा या प्रभु तो वह इस संपत्ति की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखेगा। सो कहते हैं गुरु नानक साहब कि ऐ मन ! तू जो बाहर दुनिया के स्वादों में वास्तविक मार्ग से हट गया है, तेरे अंतर में महारस है।

हमें रस कब आता है? जब किसी स्थान पर हमारी सुरत लगी हुई हो। रस किसी वस्तु का नहीं, हमारी तवज्जो (ध्यान) की एकाग्रता का है। कुत्ता हड्डी को किस आनंद से चाटता है। हड्डी में रस नहीं। उसकी अपनी ज़बान से जो लहू टपकता है यह उसका रस है। वह समझता है कि रस हड्डी में है। यही हालत हमारी है। बाहर जो रस आता है वह हमारी अपने ध्यान की एकाग्रता का रस है।

Love beautifies everything.

जब ख्याल कहीं लग जाए, तो ख्याल की एकाग्रता का रस आता है। यह रस पाना ही तो है। मजनू था, वह लैला से प्रेम करता था। लोगों ने उससे कहा कि खुदा तुम से मिलना चाहता है तो उसने कहा कि यदि खुदा मुझसे मिलना चाहता है तो लैला बनकर आये। लैला में जो सुन्दरता थी उसे मजनू की ही आंख देख सकती थी। उसने कहा था, लैला को देखना हो तो मजनू की आंख से देखो। सो कहते हैं, तुम्हारे अंतर में महारस है। तुम्हारा अपना रस है। निजानंद का भंडार भरा पड़ा है तुम्हारे अंतर। इसे पाओगे कब, जब गुरमुख बनके अंदर जाओगे। सब बात खोलकर समझा रहे हैं।

(6) अहि निस राम जपो रंग राते एह जप तप संजम सारा है॥

फरमाते हैं इस रस में मगन हो जाओ, दिन रात इसमें डूबे रहो। यही सारे जपों, तपों, संयमों का सार है। जप, तप, संयम, हम किस लिये करते हैं? इसलिए कि वह महारस प्राप्त हो। यह सब कुछ करते हुए भी उस समय तक महारस नहीं मिलता जब तक गुरु न मिले और यह गुरमुख न बने। जब अनुभवी महापुरुष मिल जाए और वह नाम का ताल्लुक (संपर्क) दे दे तो फिर दिन रात इसी में लवलीन रहो।

बैठे, लेटे खड़े उताने। कहे कबीर हम वही ठिकाने॥

गुरु नानक साहब ने इसका इस प्रकार ब्यान किया हैः

नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात॥

पहले फरमाया कि मुक्ति कैसे मिलती है? जब बाहर से हटकर अंतर में टिको और नाम से जुड़ो। फिर कहा यह सबसे उत्तम विचार है। आगे कहा कि यह सब जप, तप, संयम का सार है। बार-बार इस हकीकत को भिन्न-भिन्न तरीकों से समझाते हैं। वह दौलत तुम्हारे अंतर है, परन्तु पाओगे तब जब गुरमुख होकर अंतर में टिकोगे।

(7) राम नाम गुरुबचनी बोलो, संत सभा में एह रस टोलो॥

लोगों ने पूछा कि महाराज, आपने जिस वस्तु का वर्णन किया है कि वह मुक्ति का द्वार है, वह परम तत्व का विचार है, वह जप, तप, संयम का सार है, यह है कहाँ? हम उसे कहाँ पाएं? वह कहाँ मिलेगा? कहते हैं कि रमे हुए नाम का उच्चारण करो तो गुरु वचनों द्वारा करो। गुरु वचनों द्वारा नाम का उच्चारण करने और अपने आप पुस्तकों में पढ़ कर नाम जपने में बड़ा भारी अंतर है। दसम गुरु साहब के अनुभवी गुरमुख भाई नंदलाल जी इस बात का ब्यान इस प्रकार करते हैंः

नामे हक बे मुरशिद मे आवर जुबाँ।
मुरशिदे कामिल दिहद अज हक निशाँ॥

मुर्शिद (गुरु) के बिना हक (परमात्मा) का नाम अपनी ज़बान पर मत लाओ। क्यों ? वह तुम्हें हक (परमात्मा) की निशानी देता है। वह केवल ज़बान से ही राम-राम नहीं कहता, 'एवम ब्रह्म' करके (यह ब्रह्म है) उस रमी हुई शक्ति से हमें जोड़ देता है। वह Divine Link है, वह हमारे अंतर में है। उसमें महारस है परन्तु हमें इन्द्रियों के घाट के ऊपर लाकर उसका संपर्क देता है। उसका Contact (संपर्क) लेने के लिए पिंड से ऊपर आना पड़ता है। कबीर साहब फरमाते हैं :

जहाँ काम तहाँ नाम नहीं, जहाँ नाम नहीं काम।
दोऊ इक जा न बसें, रवि रजनी इक ठाम॥

जहाँ काम है, इन्द्रियों के भोगों रसों का लब लालच है वहाँ नाम का संबंध नहीं। उसे पाने के लिए इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना पड़ेगा,

जैसे दिन और रात इकट्ठे नहीं रह सकते, नाम होगा तो कामनाएं दूर हो जाएंगी।

जहाँ कामनाएं हैं, इन्द्रियों के भोग हैं, वहाँ नाम नहीं। गुरु कौन है? पहले कहा कि गुरमुख बनके ही नाम का संबंध पा सकते हैं, उस नाम का जो तुम्हारे अंतर में है। फिर और विस्तारपूर्वक कहा है, जिससे धोखा न रहे। कहते हैं, राम नाम गुरु वचनों द्वारा बोलो। क्यों? उसमें Thought transference है, उसमें सिद्धि है। वाल्मिकी मरा मरा कहते रहे और हकीकत को पा गए क्योंकि उसमें सिद्धि काम कर रही थी। सभी महात्मा इस हकीकत को भली प्रकार समझाते आए हैं। कहते हैं, गुरु के वचनों द्वारा रमें हुए नाम का उच्चारण करो। वैसे तो कोई कर्म निष्फल नहीं जाता।

Nothing is lost in nature

जो काम करो उसकी मजदूरी मिलेगी परन्तु अंतर में उस परिपूर्ण शक्ति से संबंध और अंतर में उसका रस उस समय तक नहीं मिलता जब तक गुरु वचनों द्वारा उस नाम को नहीं जपता। एकाग्रता में थोड़ा बहुत आनंद अवश्य है परन्तु उस रमे हुए नाम का ताल्लुक, Contact of Divine link, किसी ऐसे अनुभवी पुरुष के पास जाकर ही मिलेगा, जो तुम्हें इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर उससे जोड़ दे।

आगे कहते हैं, संत सभा में सहज रस टोलो। क्यों ? वह Atmosphere Charged (वातावरण चार्जड) है। अनुभवी पुरुष जहाँ बैठा है उस मंडल में एक विशेष प्रभाव है। वहाँ एकाग्र होकर बैठो तो वह रस मिलेगा। कई बार सत्संग से उठने को जी नहीं चाहता। यह मंडल का प्रभाव है।

महापवित्र साध का संग। जिस भेटे लागे हरि रंग॥

यहाँ भेटने का प्रश्न है। दिल से दिल को राह बनाने का प्रश्न है। यह नहीं किः

मन दिया कहीं और ही, तन साधु के संग।
कहें कबीर कोरी गजी कैसे लागे रंग॥

सत्संग में बैठो तो वहीं के हो रहो। एकाग्र हो कर बैठो। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

सत्संग करो बनाय।

तात्पर्य यह कि जब तुम वहाँ बैठो तो इस प्रकार कि यही समझो कि या तुम बैठे हो या वह महापुरुष, दूसरा कोई वहाँ नहीं। इस हालत में बैठोगे तो यदि उसकी भाषा भी न समझोगे तो ख्याल की जो रौ जा रही है वह तुम्हें Charge कर देगी। बिजली की (Current) रौ आ रही हो परन्तु यदि तुम लकड़ी लगा लो तो उसका कोई असर नहीं होगा। कबीर साहब ने एक और उदाहरण दिया है कि गंधी की दुकान पर जाओ तो वहाँ से कुछ भी तुम्हें न मिले तो सुगंध तो साथ ले आओगे। ऐसे ही संत सभा में वह नशा, वह आनंद तुम्हें मिलेगा, जिसका प्रभाव उस मंडल में है:

साध के संग बुझे प्रभ नेरा।

फिर आगे और व्याख्या की है:

(8) गुरमत खोज लहो घर अपणा बहुर न गर्भ मंझारा हे॥

कहते हैं अनुभवी पुरुष के उपदेश को धारण करके तुम निज घर को पा जाओगे, तुम्हारा आना-जाना समाप्त हो जाएगा।

यह शरीर तुम्हारा शरीर नहीं, यह देश तुम्हारा देश नहीं। तुम्हारा देश तो सत्लोक, वह अटल और अविनाशी स्थान है जहां Matter माद्दा नहीं है। स्वामी जी फरमाते हैं:

तेरा धाम अधर में प्यारी तू घर संग रहत बंधानी॥

ऐ आत्मा, तेरा घर वहाँ है, जहाँ Matter नहीं, तू कहाँ मिट्टी के साथ बंधी पड़ी है। मौलाना रूम फरमाते हैं:

अरशेस्त नशेमने तो शरमत वादा कानी ओ मुकीमी खसो खाशाक शवी॥

फरमाते हैं तुझे शर्म आनी चाहिए कि तू अर्शों की रहने वाली, कहाँ मिट्टी में रुल रही है। हम परमात्मा की अंश हैं और यहाँ शरीर और इन्द्रियों के भोगों में फंसे पड़े हैं।

संत सभा में बिजली की सी Charging है। इसलिए सत्संग की बड़ी भारी महिमा ग्रंथों, पोथियों ने की है। तप और सत्संग के विषय में विश्वामित्र और वशिष्ठ का संवाद इतिहास में आता है। ठीक है या गलत है इससे हमारी गर्ज नहीं। हमें तो मतलब से मतलब है। विश्वामित्र कहते

थे तप बड़ा है। वशिष्ठ कहते थे सत्संग बड़ा है। दोनों अपना झगड़ा लेकर ब्रह्मा के पास गए, उन्होंने देखा दोनों बलवान हैं, मैं क्या फैसला करूँगा। उनको विष्णु के पास भेज दिया। उन्होंने आगे शेषनाग के पास भेज दिया। अलंकार रूप में है। यह कहा जाता है कि शेषनाग एक ऐसा सांप है जिसने अपने सिर पर धरती का बोझ संभाल रखा है। शेषनाग सारी बात सुनकर बोले, मेरे सिर पर धरती का बोझ है। यह एक मिनट के लिए हटे और मुझे होश आए तो उत्तर दूँ। कहते हैं, विश्वामित्र जी ने 60 हज़ार वर्ष तप किया था। वे कहने लगे, मैं 50 हज़ार वर्ष के तप का फल देता हूँ, पृथ्वी ऊँची हो जाए। कुछ भी न हुआ। अंत में पूरे 60 हज़ार वर्ष के तप का फल दिया तो पृथ्वी थोड़ी देर के लिए शेषनाग के सिर से उठी और फिर वहीं टिक गई। वशिष्ठ जी ने कहा मैं ढाई घड़ी के सत्संग का फल देता हूँ। पृथ्वी शेषनाग के सिर से उठकर अडोल खड़ी हो गई। विश्वामित्र जी ने पूछा महाराज, अब निर्णय कर दीजिए। शेषनाग बोले, निर्णय तो हो गया। अब शेष क्या रहा?

जहं सतगुरु तहं सत्संगत बण आई॥

यह जो कथा वार्ता होती है, यह सत्संग नहीं। सत्संग वह है जहाँ कोई अनुभवी पुरुष बैठा हो। एक डॉक्टर जहाँ बैठा हो वह हज़ारों को शिक्षा देकर डॉक्टर बना सकता है। जहाँ एक जागृत पुरुष हो वह हज़ारों, लाखों सोए हुओं को जगा सकता है? ऐसे महात्मा से गुरुमत लेकर निज घर में बैठो। वह क्या करेगा ? वह तुम्हें अंतर में नाम से जोड़ेगा। परमात्मा अनाम है। अनाम से नाम निकला। नाम तुम्हें अनाम तक ले जाएगा। नाम से जोड़ने के पश्चात् अनुभवी महात्मा हर कदम पर तुम्हारी सहायता करेगा, हर समय तुम्हारे साथ रहेगा।

बातो बाशद दर मकानों लामकां

जीवन में भी हर समय तुम्हारे साथ है। मरने के पश्चात् भी वह तुम्हारे साथ है। ऐसी हस्ती का नाम ही गुरु है।

पिंड से ऊपर उठ गए। अंतर नाम का रस मिल गया। जब यह गति मिल जाए तो आना जाना समाप्त हो जाता है। पूरी तरह अतीत नहीं भी हुए, केवल पिंड से ऊपर उठ गए तो भी आना जाना खत्म हो जाता है।

(9) सच तीर्थ न्हावो हर गुण गावो। तत्त विचारो हर लिव लावो॥

यदि तुम्हारा ध्यान बाहरमुखी संसार में फैल रहा है तो भक्ति की सूझ नहीं मिलेगी। हम समझते हैं कि तीर्थ पर जाकर हाथ लगाने से कल्याण हो जाएगा। यह ग़लत है। तीर्थ कैसे बने। जहाँ कहीं किसी महात्मा ने प्रभु की भक्ति की, अपने आपको पहचाना और प्रभु को पाया, वहीं तीर्थ बन गए। कबीर ने इसका बड़ा सुन्दर निर्णय किया है। फरमाते हैं:

झगड़ा एक निबेड़ो राम

आगे कहते हैं:

कहें कबीर हम भयो उदास, तीर्थ बड़ो कि हरि को दास।

तीर्थ हरि के दासों के अधीन रहे हैं, हरि का दास तीर्थ के अधीन नहीं। वे सारे स्थान जहाँ महापुरुषों के चरण पड़े, आदरणीय है परन्तु वह तीर्थ कहाँ है जहाँ जाकर मनुष्य का कल्याण हो जाता है? कहते हैं वह सच तीर्थ है, अटल और स्थाई स्थान। सच की प्रशंसा क्या है?

आद सच जुगाद सच, है भी सच, नानक होसी भी सच॥

वह प्रभु सदा से है। जब कुछ भी न था युगों के प्रारम्भ होने से पहले भी वह सच था, आगे भी वह सच रहेगा। वह अटल स्थायी है, वह Unchangeable Permanence है। वह सच तीर्थ है, उसमें नहाओ।

आत्म तीर्थ करे निवास॥

वह आत्मा का निज स्थान है। आत्मा का ठिकाना कहां है? आँखों के पीछे दो भ्रूमध्य। मरते हुए आदमी को देखा होगा। सारे शरीर से प्राण निकल जाते हैं, फिर भी वह जीता है, परन्तु जब पुतलियाँ फिर जाती हैं तब मृत्यु आती है। दो भ्रू-मध्य आत्मा का ठिकाना है जहां नाम की ध्वनि हो रही है। यह वह तीर्थ है जिसके अंतर में नाम प्रकट है। उस महापुरुष के चरणों में बैठने से इस तीर्थ मैं बैठना प्राप्त होता है। यह बात समझने की है। सच तीर्थ में नहाने से तात्पर्य क्या है? बाहर से हट हटाकर आत्मा के स्थान पर, जो आंखों के पीछे दो भ्रू-मध्य है, वहां बैठो। वहां कब बैठ सकोगे? जब कोई अनुभवी महात्मा अपनी तवज्जो का, उभार देकर इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर बैठाएगा। वहां प्रकाश है, वहां ध्वनि भी हो रही है।

जब देखा तो गावा॥

वहां आंखों से वह ज्योतिस्वरूप प्रभु की ज्योति देखेगा तब उसके गुण गाएगा। देखकर वाह वाह करना और चीज़ है, खाली किताबें पढ़कर सिर मारना और बात है। सो कहते हैं कि सारे तत्वों का विचार करके हमने जो परम तत्व है, उसका ब्यान कर दिया है। उसके साथ लिव लगा लो तो काम बन जाएगा।

(10) अंत काल जम जोह न साके हर बोलो राम प्यारा हे॥

यदि उस रमे हुए नाम का ताल्लुक मिल जाए और तुम उसका रस पाने लगो तो अंत काल में जम नहीं आएगा और तुम राम राम कहने का फल पा जाओगे। गुरु राम दास फरमाते हैं:

अफरयो जम मारेया न जाई गुरु के शब्दे नेड़ न आई॥

इस ध्वनि को सुनकर जम दूर भागता है। आगे कहते हैं:

नाम सुणे ताँ दूरों भागे, मत मारे हर जियो बेपरवाहा हे॥

गुरु द्वारा जो नाम मिलता है, उसका उच्चारण करने से यम भाग जाता है। यारी साहब एक महात्मा हुए हैं, फरमाते हैं:

रसना राम कहन ते थाकी।

पानी कहत कब प्यास बुझत है, प्यास बुझे जब चाखी।

पानी पानी कहने से भी कभी प्यास बुझती है? प्यास तभी बुझेगी यदि पानी पियोगे। दुनियावी मिसाल है। पिया के गीत कंवारी लड़कियां भी गाती हैं और विवाहित स्त्रियां भी, परन्तु सुहागन के गाने में जो प्रभाव है वह उन लड़कियों के गाने में नहीं जिन्होंने पिया को देखा ही नहीं। जो आत्मरस ले रहा है, उसका प्रभु का नाम लेना कुछ महत्व रखता है। जिसे अंतर में वह रस मिला ही नहीं वह लाख पढ़ पढ़कर सिर मारता फिरे। सत्संग कमाई वाले महात्मा की संगत का नाम है। उसके मंडल में थोड़ी देर बैठो, उसका ज़बरदस्त Reaction (असर) होगा। उसके मंडल में बड़ी भारी चार्जिंग है।

एक मिशाल है। कहते हैं एक अमीर आदमी रुपया इकट्ठा करने के लिए किसी गांव में गया। वहां शाम हो गई, रुपयों का थैला उठाने के लिए कोई कुली न मिला। बेचारा खुद

ही सिर पर लादकर चल पड़ा। पांच-छह मील दूर गया। वहां कोई महात्मा रहते थे। उन्होंने बोझ से लदे उस मनुष्य की दर्द भरी पुकार सुनी। बोले, "तुम्हारा बोझ मैं उठाए लिये चलता हूँ परन्तु एक शर्त है। वह यह कि या तो तुम परमात्मा की बात सुनाओ या फिर मुझसे सुनो।" उसने सोचा इसमें क्या है, हां हां करते चलेंगे। कमाई वाले महात्मा की बात में Charging (चार्जिंग) का असर होता है। निश्चित स्थान पर पहुँच कर महात्मा वापस लौटे तो मुड़कर उस अमीर से बोले, "भाई ! देख सप्ताह भर में तेरी मृत्यु हो जाएगी। तूने जीवन भर कोई अच्छा काम नहीं किया। यही जो थोड़ा समय तूने मेरे साथ सत्संग में व्यतीत किया है यही तेरे जीवन का अच्छा काम है। अब तू यह करना कि धर्मराज जब तुझसे पूछे कि तू पहले नेक कर्म का फल लेगा या बुरे कर्मों का दण्ड तो तू पहले नेक कर्म का फल मांग लेना।" नियत समय पर उसकी मृत्यु हो गई, उसने महात्मा की बात पर अमल किया। महात्मा का ऊंचा आत्मिक मंडल था, यमों की वहां तक रसाई न थी। वे दूर खड़े रहे और अपने कैदी को वहां भेज दिया और साथ ही यह भी ताकीद कर दी कि वहां से शीघ्र ही वापस लौट आना। उस मनुष्य ने देखा कि वही महात्मा जिसने उसकी गठड़ी उठाई थी, वहां बैठा था। महात्मा दोनों स्थान पर काम करता है, यहां भी और ऊपर के मंडलों में भी। वह शरीर का कैदी नहीं होता। उसमें वह गुरु पावर काम करती है। जिसने उस गुरु पावर को जान लिया वह जन्म मरण के डर से सदा के लिए मुक्त हो गया। उसके पास जाओ तो एकाग्र होकर उसके सामने बैठो। बस इतना ही तुम्हें करना है और कुछ नहीं करना। उसके मंडल में Charging का प्रभाव है। उसका ज़बरदस्त Reaction (असर) होगा। यह वह प्रभाव है जिसके कारण कहा है कि सत्संग की ढाई घड़ी का फल 60 हज़ार वर्ष के तप से भारी है परन्तु कोई अनुभवी महात्मा मिले तो ऐसा सत्संग है। यह सत्संग मिलता कहां है? विद्वानों ने पैसे कमाने के लिए दुकानें खोल रखी हैं। यहां पढ़ने-लिखने का प्रश्न नहीं। आत्म अनुभव का प्रश्न है। वह अमीर जिसने सारी उम्र कोई नेक काम नहीं किया था जब सत्संग के पुण्य प्रताप से ऊपर रूहानी मंडलों में उस महात्मा के चरणों में पहुंचा तो बार-बार दरवाज़े

की तरफ देख-देखकर व्याकुल हो रहा था। महात्मा ने पूछा, क्या बात है? वह बोला "महाराज ! यम मुझे देख रहे हैं। मुझे वापस जाना है।" महात्मा बोले, "देखने दो उनको, तुम पर मेरी मोहर लग चुकी है, यम तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।" पूर्ण महात्मा के पास जाने से जीव पर मोहर लग जाती है नाम की।

(11) सत्गुरु पुरुख दाता बड़ दाणा,
जिस अंतर साच सो शब्द समाणा॥

सतगुरु की दात सबसे बड़ी दात है। नाम की दात है। नाम की दात नाश नहीं हो सकती, संसार की बाकी सब वस्तुएं नाशवान हैं। इसलिए कहा है:

सत्गुरु बिन अवर न दाता बिया।

वह बुद्धिमानों से बुद्धिमान है जिस ने परम-तत्व को जान लिया है। वह पथ-प्रदर्शक भी है, सहायक भी है। वहां चोरों, डाकुओं का भी कल्याण हो जाता है। वह शरीर नहीं, वह शब्द रूप है। मसीह के शब्दों में, वह Word personified (शुद्ध सदेह) है। मसीह ने एक स्थान पर कहा है मेरी चाहे कितनी निरादरी करो, तुम्हें माफ है परन्तु मेरे अंतर में जो गुरु पावर, जो Holy Ghost काम कर रहा है, उसकी निरादरी करोगे तो तुम्हें कभी माफ नहीं किया जाएगा।

गुरु को माणस जानते, जन्म जन्म होएं स्वान।

परन्तु गुरु भी जो सचमुच गुरु हो, So-called (तथा-कथित) गुरु नहीं। हम महात्मा को पहचानने में धोखा खा जाते हैं। हम उसे शारीरिक दृष्टि से देखते हैं। वह शब्दस्वरूप है, Word personified (शुद्ध सदेह) है। मसीह से एक उनके शिष्यों ने कहा, आप सदा अपने परम पिता का ज़िक्र करते हैं। क्या अच्छा होता, आप हमें परम पिता का दर्शन भी करा देते। इतनी बात सुनकर वे जोश में आकर बोले, "अफसोस मैं इतनी मुद्दत तुम लोगों के साथ रहा, परन्तु तुम्हें इतनी भी खबर न हुई कि मेरा पिता मुझमें काम कर रहा है।" गुरु अर्जुन देव भी यही बात कहते हैं:

पिता पूत एके रंग लीने॥

एक और स्थान पर कहते हैं:

पिता पूत रल कीनी सांझ॥

मसीह ने एक और स्थान पर कहा, मैं और मेरा पिता एक हैं, जिसने मुझे देखा, उसने मेरे पिता को देखा। एक और जगह फैसला किया है:

Word was made flesh and dwelt amongst us.

महात्मा वह पोल है जिसके अंतर वह दबी हुई घट-घट व्यापी नाम की पावर काम करती है। वह शब्द स्वरूप होता है। हज़ूर स्वामी जी महाराज फरमाते हैं:

साधू मिले तो शब्द कमाना।

वहां जाओ तो चुपचाप एकाग्रता से उसके पास बैठो, तुम्हें ठंडक मिलेगी। बर्फ पर काला कंबल भी डाल दो तब भी उससे ठंडक प्रतीत होती है। मसीह ने कहा:

Eat me and drink me.

"मुझे खाओ और मुझे पियो।" शिष्य उनकी पहली बात भूल गए और कहने लगे, "तुम्हें कहां से खाएं और कैसे खायें?" वे भूल गए कि Word was made flesh and dwelt amongst us, कि महात्मा शब्द स्वरूप है। उसकी कृपा से अंतर में नाम की ध्वनि का जो संबंध मिलता है उसके साथ लगने का मतलब था। यह शब्द जो आ रहा है इसमें गुरु नानक साहब ने खोलकर परमार्थ का सारा भेद बता दिया है। गुरु नानक बड़े लाधड़क महात्मा हुए हैं। उन्होंने कोई बात छिपकर नहीं रखी, हकीकत को निर्भय होकर ब्यान किया। एक स्थान पर इस बात का निर्णय किया है कि वह महात्मा और गुरु जिसकी इतनी महिमा की है वह कौन है? कहते हैं:

गुरु में आप समोए शब्द वरताया॥

वह Polarised God है। वह मल मूत्र का थैला लेकर संसार में इस लिए बैठा है कि यह जीव किसी प्रकार बंधन से मुक्त हो जाए। कैदखाने में कैदी भी आते हैं दण्ड भुगतने के लिए। उसी कैदखाने में डॉक्टर भी आता है जिसकी सिफारिश पर कैदियों को आज़ाद कर दिया जाता है। हम इतने ऊंचे नहीं हुए कि उस अदृष्ट और अगोचर को देख सकें और जान सकें। हमें बंधनों से निकालने के लिए उसे नीचे आना पड़ता है।

(12) जिस को सत्गुरु मेल मिलाए तिस चूका जम भै भारा हे॥

फरमाते हैं जिसे मालिक ने अनुभवी महात्मा से मिला दिया उसका जन्मों-जन्मों का डर दूर हो गया। एक और जगह गुरु नानक साहब ने इस हकीकत को यों ब्यान किया हैः

कहु नानक जिन सत्गुरु मिलेया तिन का लेखा निबड़ेया॥

सत्गुरु से मिलने का, दिल से दिल को राह बनाने का सवाल है। यह नहीं कि सत्गुरु से मिलो और पाप भी करते रहो। सत्गुरु का मिलना क्या है? गुरबाणी इसका भी निर्णय करती हैः

गुरु मिला तब जाणिए मिटे मोह तन ताप॥

यह मिलने की गति है। यह गति मिल जाए तो इसका नतीजा क्या होगा? जन्मो-जन्मों का भय दूर हो जाएगा। सत्गुरु के कहने के अनुसार कमाई करे और जीते जी इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर नाम से लगे तो मरकर भी वहीं जाएगा। ऐसे महात्मा का शिष्य भी संसार से अतीत रहता है। उठते, बैठते, खाते, पीते प्रीतम की याद उसके मन में रहती है। जो सचमुच प्रेमी है सत्गुरु का, जो सच्चा भक्त है उसका, यह मर के कहां जाएगा? 'जहां आसा तहां वासा।' वह जन्म मरण के बंध से मुक्त है तो उसका शिष्य कब बंधन में आएगा? As you think so you become. मनुष्य जिसका चिंतन करता है उसका रूप हो जाता है।

(13) पंच तत्त मिल काया कीनी, तिस में राम रत्न लै चीनी॥

फरमाते हैं पांच तत्वों की यह काया है। यह शरीर पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश इन पांच तत्वों का बना हुआ है। इसमें अनमोल रत्न है वह रमा हुआ नाम परन्तु यहां हालत क्या बनी पड़ी है।

एका संगत एका ग्रह बसते मिल बात न करते भाई।

कितने दुख की बात है। पांच तत्वों के इस शरीर में अनमोल और अविनाशी वह राम रम रहा है। इसमें आत्मा का निवास है जो प्रभु की अंश है। दोनों इस नाशवान शरीर में निवास कर रहे हैं परन्तु आपस में मिलाप नहीं, कितने अफसोस की बात है?

जिस्म में सबसे कीमती चीज़ है आत्मा। कपड़ा फट जाए और शरीर बच जाए तो मनुष्य कहता है क्या हुआ (अगर) कपड़ा फट गया, मैं तो

बच गया। मतलब यह कि शरीर कपड़े से ज्यादा कीमती है। टांग या बाजू कट जाए तो कहता है शुक्र है मैं तो बच गया। जान की कीमत शरीर से ज्यादा है। इससे भी ज्यादा कीमती चीज़ है हमारी आत्मा जो अजर अमर अविनाशी है। आत्मा इस काया का आधार है और आत्मा का आधार है परमात्मा। इस पांच तत्व के पुतले में अनमोल रत्न है परमात्मा। उससे लगे तो इसे चैन आए, शान्ति मिले। परमात्मा मिल जाए तो फिर सारी दुनिया तुम्हारे पांव तले हो गई।

बड़ा सुन्दर दृष्टांत है एक। किसी बादशाह ने मीना बाज़ार लगाया। दुनिया की चीज़े उसमें रखीं। हुक्म दिया प्रजा में जिसको जो चीज़ पसंद आए वह मुफ्त उठा ले जाए, मगर एक बार फैसला करना होगा कि कौन सी चीज़ चाहिए। एक ही चीज़ मिलेगी और शाम तक यह रियायत सबको मिलेगी। एक लड़की सुबह से घूमती फिर रही थी मीना बाज़ार में। उसने कोई चीज़ न उठाई। लोगों ने कहा, "नादान लड़की ! समय बीता जा रहा है, तुझे जो लेना है ले ले।" वह लड़की बाहर से दीवानी थी, अंदर से बड़ी सियानी थी। वह मन में सोच रही थी कि ऐसी अद्भुत चीज़ें जिसने सजा रखी हैं वह है कौन? इन चीज़ों को बनाने वाला कौन है? लोगों ने बहुतेरा समझाया मगर वह लड़की धुन में मस्त चली गई। अब बादशाह अपनी जगह हैरान था कि मेरी प्रजा में मेरा चाहने वाला कोई भी नहीं। मेरी दातों को सब चाहते हैं और इन चीज़ों को उठाए लिये जा रहे हैं मगर दाता की किसी को सुधि नहीं।

दात प्यारी बिसरेया दातारा॥

इतने में क्या देखता है कि एक लड़की उसी की तरफ चली आ रही है। दिल में खुश हुआ कि चलो एक तो मेरा चाहने वाला निकला मगर बाहर से त्यौरी चढ़ाकर बोला, "नादान लड़की, क्यों बेकार समय खो रही है?" लड़की बोली, "बादशाह ! यह मीना बाजार किसका है?" बादशाह ने कहा "मेरा है।" उसने आगे बढ़कर बादशाह के सिर पर हाथ रख दिया और बोली, "तुम किसके हो?" बादशाह ने कहा, "तेरा।" लड़की बोली, "जब तू मेरा है तो ये सारी चीज़ें भी मेरी हो गईं।" सो पांच तत्वों के इस शरीर में सबसे कीमती चीज़ है परमात्मा जो इसमें निवास कर रहा है। जो उससे लगा रहे सारा जहान उनके कदमों तले है।

(14) आत्म राम राम है आत्म हर पाइए शब्द विचारा हे॥

फरमाते हैं हमारी आत्मा के अंतर राम रम रहा है और उस राम में हमारी आत्मा रम रही है मगर हम इस हकीकत से बेखबर हैं। कबीर साहब फरमाते हैः

जल में मीन प्यासी, यह देख मोहे आवे हासी॥

फरमाते हैं मछली का जीवन-आधार पानी है, मगर उसे इस हकीकत की खबर नहीं।

पांच तत्व के इस पुतले में आत्मा भी है और परमात्मा भी। वह परमात्मा मिले कैसे? फरमाते हैं, शब्द की कमाई से। शब्द आपको परमात्मा में लय कर देगा। इसकी सूझत कब मिलेगी? जब शब्द की कमाई करोगे।

पार साजन अपार प्रीतम गुरु सुरत शब्द लंघावे॥

शब्द का संबंध मिलने से हरि प्रीतम मिलता है और मनुष्य जीवन की सारी मेहनतें सफल हो जाती हैं। हम गुरुबाणी खाली पढ़ छोड़ते हैं। इसके अर्थ पर विचार नहीं करते।

(15) सत संतोख रहो जन भाई, खिमा गहो सत्गुर सरणाई॥

अब फरमाते हैं उस अनमोल रत्न को, उस प्रभु को जो तुम्हारे अंतर में रम रहा है उसे पाने के लिए कुछ गुण, कुछ Qualifications चाहिएं। वे क्या हैं? सबसे पहले सच धारण करो। उस सच्चे से, उस Unchangeable Permeance से लगने से पहले बाहर सच धारण करो। सच किसे कहते हैं? जो तुम्हारे दिल में हो वही ज़बान पर भी हो। तुम्हारा अंदर बाहर एक होना चाहिए।

ख्वाजा हाफिज़ साहिब फरमाते हैः

ई कारे यकरंगा बवद।

हम बाहर से और हैं, अंदर से और। यह सच नहीं, सच यह है कि जो ज़बान पर है वही दिल में भी हो। यदि केवल सच बोलना सीख जाओ तो तुम्हारे सारे पाप धुल जाएं। [illegible] दूसरी वस्तु है संतोष। यह जो बढ़ती हुई इच्छा है। सौ वाले को हज़ार, हज़ार वाले को लाख की, अफसर को कमांडिंग अफसर बनने की, इसे छोड़ दो। संतोष यही है कि जहां खड़े हो, वहीं खड़े हो जाओ। इच्छाएं रुकें

तो मन खड़ा हो। संसार के लब लालच में हम कुत्ते की तरह हौंकते हैं, हज़ार झूठ बोलते हैं? तीसरी चीज़ है क्षमा करना। क्षमा करना बहादुर पुरुषों का काम है। यह (जीव) Justice (न्याय) मांगता है। संत कहते हैं क्षमा कर दो। मेरे अपने जीवन की घटना है। किसी ने मेरी चोरी कर ली। पुलिस वालों ने चोर को पकड़ लिया। मैंने कहा, इसे क्षमा कर दो, परन्तु पुलिस वाले चोर को कब छोड़ते हैं। थाने में रिपोर्ट हुई। मैं साथ था। मैंने वहां भी कहा कि इसे माफ कर दो। कोर्ट में मुकद्दमा चला। वे न्याय पर तुले हुए थे। मैंने कहा कि मैंने इसे माफ कर दिया। चोर के माता पिता भी वहीं पर थे। वे कहने लगे कि यह सरदार साहिब तो इसे छोड़ते हैं पर हाकिम नहीं छोड़ते। मैंने जज से कहाः

"Judge Sahib if you can find a way to release him, I would be grateful".

चोर ने भी मान लिया कि उसने गलती की है। इसके बाद वह जब भी मिलता, बड़े प्रेम से मिलता। उसका जीवन बदल गया। हम अशान्त क्यों रहते हैं? कारण यही है कि हम माफ नहीं कर सकते।

जब लग धारे को वैरी मीत, तब लग निहचल नाहीं चीत॥

हम आंख बंद करते हैं तो अंतर में हज़ारों वेग चलते हैं। कहीं ईर्षा का, कहीं द्वेष का, कहीं चेष्टा का। ऐसी दशा में एकाग्रता कहां।

हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज कहते थे "यह हाय हाय भी किये जाता है और ज़हर भी खाए जाता है।" कहीं खड़ा तो हो। सो कहते हैं कि ये चीज़ें धारण करो-सत्, क्षमा और संतोष। परमार्थ दूर है, केवल ये तीन चीज़ें हों तो अंतर्यामता प्राप्त हो जाती है।

(16) आत्म चीन्ह परातम चीन्हो गुरु संगत इयो निस्तारा हे॥

सत्, संतोष, क्षमा धारण करो, तभी अपने आपकी सूझत मिलेगी, तभी आत्मा को चीन्ह (जान) सकोगे। जहाँ अंतर में आग जल रही हो, ऊपर से हम चाहे कितना ही मान करें, हम दुनिया को धोखा दे सकते हैं परन्तु उस अंतर्यामी प्रभु को धोखा नहीं दे सकते। वह हमारी हर हरकत को देखता है। यह सूझत कहां से मिलती है? गुरु की संगत में। जिसे यह एहसास हो कि वह प्रभु अंतर में बैठा मेरी हर बात देख रहा है, वह पाप कैसे कर सकता है। हज़ूर फरमाते थे, "पांच वर्ष का बच्चा भी सामने

खड़ा हो तो मनुष्य पाप नहीं करता तो जो मनुष्य यह जान ले कि परमात्मा हमारे सब कर्मों को देखता है वह क्यों पाप करेगा।'' एक बार बड़े ज़ोरों से मेरे विरुद्ध प्रोपेगंडा शुरू हुआ। हर गांव और हर शहर में प्रचार होने लगा मेरे खिलाफ। मैं देखता था गुरु अंतर्यामी अंतर में बैठा मेरी हरेक बात को देख रहा है। फिर मुझे सफाई देने की क्या ज़रूरत है। मेरे भाई हज़ूर के पास गए, मैंने उनसे भी कुछ न कहा। मैंने कहा, हज़ूर सब देखते हैं, सब जानते हैं। खुदा की शिकायत उसके रसूल से नहीं करनी चाहिए। आठ नौ महीने यों गुज़र गए। मैंने हज़ूर से कभी कुछ नहीं कहा। चुपचाप उनके चरणों में बैठ जाता था। वे जो कहते थे उसे गौर से सुनता था। सारी उम्र में मैंने केवल दो प्रश्न हज़ूर से किए। जब मेरे भाई हज़ूर के पास गए तो हज़ूर फरमाने लगे, ''उसके (कृपाल सिंह) सिर से नेजों पानी गुज़र गया, मैं हैरान हूं कि इसने एक बार आकर मुझसे नहीं कहा कि यह बात यों नहीं यो है।'' भाई साहब के ज़ोर देने पर भी मैंने हज़ूर से वक्त नहीं मांगा। गुरु के पास बैठने से सारा सुख मिल जाता है। वहां जाओ तो चुपचाप एकाग्र होकर बैठो, सुनो, वह क्या कहता है। उसकी हर बात में एक भेद होता है। हां तो हज़ूर से मैंने पांच मिनट का समय मांगा। फरमाया, ज़रूर मिलेगा। मुझे ऊपर बुला लिया। दरवाज़े बंद कर दिए। कमरे में अंगीठी जल रही थी। मैंने कहा, ''हज़ूर मैं देख रहा हूं कि आप अंतर में बैठे मेरे हर काम को देख रहे हैं। जो मैं अब सोच रहा हूँ और आगे भी जो Trend है वह आप देख रहे हैं तो फिर मुझे बाकी और कहना ही क्या है? यही कारण है कि मैं आपके पास अपनी सफाई देने नहीं आया।'' बस इतनी बात से पासा पलट गया। अगले दिन सत्संग में फरमाया कि सत्संग कृपाल सिंह करेगा। विरोधी बोले कि हज़ूर हम तो आपका सत्संग सुनेंगे। हज़ूर ने कहा, ''वह मेरी आज्ञा से ही सत्संग करेगा।'' कदाचित मेरी दिल की सफाई हज़ूर को पसंद आ गई। परमार्थ में साफदिली की बड़ी ज़रूरत है। हज़ूर फरमाया करते थे, ''मेरा रस्सा बहुत लंबा है। मैं लंबी डोर देता हूं। जब किसी तरह न माने तो रस्सा खींच लेता हूं।''

(17) साकत कूड़ कपट में टेका, अहि निस निंदा करे अनेका॥

अब गुरु नानक साहब संसार की ओर आते हैं। जिनके अंतर में संसार बस रहा है वे झूठ, कपट, नफरत और अनाधिकार चेष्टाओं में लगे रहते हैं। हज़ूर फरमाते थे कि जब संतों के पास माया इकट्ठी हो जाती है तो उनके पास माया के पुजारी भी इकट्ठे हो जाते हैं। उदाहरण देकर समझाते थे कि जैसे गाय के साथ लगे हुए चिच्चड़ खून चूसते रहते हैं और बछड़ा दूर से आकर दूध पी जाता है, इसी तरह जिनके अंतर में दुनिया बस रही है, संतों के पास रहकर भी परमार्थ के धन से वंचित रह जाते हैं। कूड़ कहते हैं नाशवान चीज़ों को। गुरबाणी में इसका फैसला बड़ी सुन्दरता से किया गया हैः

कूड़ राजा कूड़ परजा।

आगे लंबी तुक है यह। संसार की सारी चीज़ों को ब्योरेवार कहने के पश्चात् अंत में कहते हैंः

कूड़ कूड़े नेह लग्गा बिसरेया दातार।।
किस नाल कीजे दोस्ती सब जग चल्लणहार॥

ये सब चीज़ें नाशवान हैं। इन नाशवान चीज़ों से लगकर यह उस अंतर्यामी प्रभु को भूल गया जो इसके अंतर में रम रहा है।

कूड़ के बाद है कपट। कपट यह है कि अंदर से कुछ और हो, बाहर से कुछ और। हज़ूर फरमाया करते थे कि बाहर से संसार को कितना ही धोखा दे ले मगर वह जो अंतर बैठा है, वह तो देखता है। वह अनजान नहीं, उसे कौन धोखा दे सकता है। दीवार पर सफेदी करने से पहले सारे दाग धब्बे दूर करने पड़ते हैं, तभी उस पर सफेदी आती है। जो संसारी जीव हैं वे संसार में फंसे हुए कूड़ और कपट में पड़े हर समय लोगों की झूठी निंदा में लगे रहते हैं। ऐसे लोगों के हृदयों में परमात्मा की झलक कहां? जो नाशवान चीज़ों के संग्रह में लगे हुए हैं उन्हें न खुद शांति है न उनके साथ लगने वालों को है। हज़ूर फरमाया करते थे, "और तो सब पापों में किसी न किसी प्रकार का कोई स्वाद है परन्तु निंदा में क्या स्वाद है? वह खट्टी है या मीठी," मगर हालत यह है कि घर घर में निंदा हो रही है। एक समाज दूसरे समाज की, हद यह कि एक माहत्मा दूसरे महात्मा की निंदा कर रहा है। दो महात्मा

एक स्थान पर नहीं रह सकते। जहाँ यह हालत हो, समझो वहां हकीकत की सूझत नहीं आई।

जो बड़ा बनना चाहते हैं बड़े बन के दिखाएं। सत्, संतोष और क्षमा को धारण करें, संसार उन्हें मानेगा। अकबर ने एक बार कहा, कोई काटे बिना बड़ी लकीर को छोटा कर दे। बीरबल ने उस लकीर के साथ एक और बड़ी लकीर खींच दी। वह छोटी हो गई। हम काटकर दूसरी लकीर को छोटा करने में लगे रहते हैं।

निन्दा भली किसी की नाहीं, मनमुख मुग्ध करंन॥

बुरे की भी निंदा ठीक नहीं। हज़ूर फरमाते थे, कीचड़ में ईंट फैंकोगे तो छींटे तुम पर ही पड़ेंगे।

Temperance Society टैम्प्रैंस सोसायटी के प्रचारक सदा कहते हैं कि शराब पीना बुरा है। प्रायः देखा गया है कि अधिकतर ऐसे उपदेशक ही शराबी होते हैं। जापान का एक उदाहरण है। पादरी लोग वहां पहुँचे और प्रचार किया कि स्त्रियों को मारना पाप है। लोग यह सुनकर बड़े हैरान हुए कि स्त्रियों को भी कहीं पीटा जाता है? इस प्रचार के प्रभाव से उन्होंने भी स्त्रियों को मारना [illegible] प्रारम्भ कर दिया। निगेटिव प्रचार का प्रभाव अवश्य पड़ता है। साकत (मनमुख) लोगों को जो परमात्मा से टूटे हुए हैं, दुनिया जिनका दीन ईमान बन गई और जो नाशवान चीज़ों के प्राप्त करने में लगे हुए हैं उन्हें तो बात बनाने के लिए निंदा करनी पड़ेगी। [illegible] वे तो कहते हैं:

संतन निन्दा चौकीदार बिठाई।

कबीर साहब फरमाते हैं:

निन्दक हमारे आंगन बसे।

अगर आदर्श परमार्थ हो तो आपस में झगड़ा क्यों हो। मगर लोगों ने तो परमार्थ को आमदनी का ज़रिया बना रखा है। जिन दिनों में मठों के बारे में कानून बनने लगा तो देखा गया कि ऋषिकेष में मठवालों ने जायदादें बेचनी आरम्भ कर दीं। परमार्थ की लगन कहीं-कहीं है। इसलिए गुरबाणी में आया है:

तेरा सेवक इक्क अद्धा होर सगले ब्यौहारी॥

कि हे प्रभु तेरा सेवक तो कहीं-कहीं मिलता है।

(18) बिन सिमरन आवै फुनि जावै गर्भ जोनी नरक मझारा हे॥

संसार जिनका दीन ईमान बन चुका है उनको प्रभु कहां? वे लब, लालच में कुत्तों की तरह हौंकते फिरते हैं। उनका आना जाना लगा रहता है। हज़ूर अफगान वार (Afgan war) का एक उदाहरण दिया करते थे कि एक मनुष्य जिसके जिम्मे जानवरों का राशन था, राशन में से चोरी करके उन्हें कम राशन देता था। मरते समय वह चिल्ला रहा था कि मुझे बचाओ गायें सींग मारती हैं। जैसा बोओगे वैसा काटोगे। महात्मा कृपा करके हमें सीधे मार्ग पर डाल देता है। प्रारब्ध कर्म हम धैर्य और शांति से भोग लेते हैं। नाम के साथ लगने से संचित कर्म दग्ध हो जाते हैं और मनुष्य निहकर्म हो जाता है। इन्द्रियों से उपराम हो जाए तो आगे मैल ग्रहण ही नहीं करता। डाकू से डाकू भी उनकी शरण में आ जाए तो उसका कल्याण हो जाता है। वे क्या कहते हैं? बस आगे के लिए यह काम नहीं करना। हज़ूर हजारों की संगत में फरमाया करते थे, जब कोई उनसे अपने गुनाह के लिए कहता तो कहते कि कोई इसके पाप अपने सिर लेता है? फिर खुद ही फरमाते, "अच्छा अब आगे न करना।" वह आगे के लिए मार्ग दे देते हैं और पिछले कर्मों को नाश करने की युक्ति भी दे देते हैं।

(19) साकत जम की काण न चूके। जम का ड़ड न कबहुं मूके॥

जिसके टेक कूड़, कपट में है, दुनिया जिनका दीन-ईमान बनी पड़ी है, ऐसे साक्त लोगों के लिए यम का द्वारा हर समय खुला पड़ा है। हज़ूर छोटा सा उदाहरण दिया करते थेः

"एक पक्का मुजरिम जब कैद से छूटता है तो जाते समय जेलर से कह जाता है कि मेरी कोठड़ी तैयार रखना, मैं फिर आ रहा हूं।"

(20) बाकी धर्मराय की लीजै सिर अफरेयो भार अफरा हे॥

यह बड़ा बलवान है। वह किसी को छोड़ता नहीं। प्राण तो अंत में देने ही हैं। उन्हें यमों के हवाले क्यों करो, क्यों न जीते जी उसे गुरु के हवाले कर दो ताकि तुम्हारी ज़िन्दगी का बीमा हो जाए। संसार में तो

केवल मौत का बीमा होता है। ज़िन्दगी का बीमा तो केवल नाम के साथ लगने से ही होता है। जिन्होंने गुरु की शरण आकर भी प्राण उसके हवाले नहीं किए, समझो अभी दो-चार जन्म और हैं मगर उनके साथ रियायत यह है कि वे मनुष्य जन्म से नीचे नहीं गिरेंगे। गुरु का हो जाए तो उसके हवाले होकर रहे।

(21) बिन गुरु साकत कहो को तरेया, हौमैं करता भौजल परेया॥

अब नतीजा निकालते हैं कि बताओ गुरु के बिना कौन भवसागर से पार उतरा है? जब तक कर्तापन का भाव है, हौमैं मौजूद है, संसार में आवागमन लगा रहेगा। गुरु शब्द या नाम से जोड़ देता है।

हौमैं ममता शब्द जलाई, गुरुमुख जोत निरंतर पाई॥

हौमैं या कर्तापन का भाव जहां समाप्त हुआ वहां जन्म-मरण का चक्कर नहीं रहता।

(22) बिन गुरु पार न पावे कोई हरि जपिऐ पार उतारा हे॥

अब फिर वही बात दोहराते हैं कि बिना गुरु के भवसागर से पार होना नामुमकिन है। यहाँ कोई Exception (छूट) नहीं। बाहर की विद्या के लिए गुरु की जरूरत है तो अंतर रूहानी ज्ञान के लिए क्यों नहीं?

यह इन्द्रियों के घाट से ऊपर उठने की विद्या है। प्रथम तो अपने आप कोई जा ही नहीं सकता। हमारे कानों और हमारी आंखों पर जो मोहरें लगी हुई हैं, उन्हें कोई समर्थ अनुभवी पुरुष ही तोड़े तो अंतर की आंख खुले और आगे मार्ग मिले। जो अपने आप जा सकते हैं वे खुशी से जा सकते हैं मगर अपने आप कोई जा नहीं सकता।

श्री गुरु रामदास फरमाते हैं:

धुर खसमें का हुक्म भया बिन सतगुरु चेतेया न जाए॥

यहां कोई Exception नहीं। यह कुदरत का अटल नियम है।

(23) गुरु की दात न मेटै कोई, जिस बख्शे तिस तारे सोई॥

नाम की जो दात गुरु देता है, कोई शक्ति उसे मिटा नहीं सकती। जिसको यह दात दे दे वह तर जाएगा। संत मालिक के दर के दरबारी हैं। हर दरबारी का अपना-अपना महकमा होता है। संतों के हाथ में नाम का Portfolio (महकमा) है।

जीवों को पिंड से ऊपर लाकर नाम से जोड़ना और प्रभु से मिलाना यह उनका काम है। अवतारों का अपना काम है। धर्मियों को उबारना और पापियों को दंड देना। संत जिसे बख्श दे, परमात्मा भी उसे बख्श देता है।

(24) जन्म मरण दुख नेड़ न आवै मन सो प्रभ अपर अपारा हे॥

यह पूरे गुरु की प्रशंसा है, So-called (तथाकथित) गुरु की नहीं।

जिसदा मालक भुक्खा नंगा होवे तिसदा नफर कित्थों रज्ज खाए॥

जिसे गुरु ने दात दे दी उसका जन्म मरण का दुख दूर हो गया। सत्गुरु में वह मालक आप समाया हुआ है। उस पोल पर वह प्रभु की ताकत काम करती है। मौलाना रूप फरमाते हैं, "जो वली अल्लाह के करीब आ गया, वह परमात्मा के करीब आ गया, जो उससे दूर हो गया समझो खुदा से दूर हो गया।"

(25) गुर ते भूले आवो जावो, जन्मे मरो फुन पाप कमावे॥

गुरु से जो दूर है उनका आना-जाना बना रहता है। कर्तापने के भाव से जो कर्म करो उसकी सजा ज़ज़ा भुगतनी पड़ती है। गुरु Wind up (खत्म) करता है कर्मों को। अंतर में टिकने से आत्मा बलवान होगी। आत्मा बलवान हो तो कर्मों के दुख Pinching (चुभते) नहीं रहते। खुशी-खुशी प्रारब्ध कर्म भोग लेता है। संचित कर्म अंतर नाम के साथ लगने से दग्ध हो जाते हैं। इसलिए कहा है कि बिन गुरु कौन तरा है भवसागर से। असूल असूल है।

(26) साकत मूढ़ अचेत न चेतै दुख लागे तां राम पुकारा हे॥

यहां एक बात है। कोई पिछले संस्कारों के कारण एम.ए. है। कोई यहां आकर शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ करता है मगर जो पैदा होने से पूर्व ही विद्वान थे, पूर्ण थे, वे भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते। जैसे कबीर साहब ने रामानंद को गुरु धारण किया था। गुरु नानक साहब थे। छोटी उम्र में ही अनुभव था। पढ़ने बैठे तो मौलवी ने कहा, कहो अलफ। ये बोलेः

अलफ अल्ला नूँ याद कर, दुनिया मनों विसार।

जगत उद्धार के लिए घर से निकलने लगे तो दुनिया वालों ने जिनकी ज़बान दोमुखी सांप की भांति विषैली होती है, मार्ग रोका। सास ने दो

बच्चे आगे कर दिए और बोली, "नानक ! तूने यही करना था तो ये बच्चे क्यों पैदा किए थे।" बोले, "माता ! तू जिन बंधनों में मुझे फंसाना चाहती है मैं दुनिया को उन बंधनों से आज़ाद करने आया हूँ।" जिनके पेट पर लात लगती है, जिनके अंतर कूड़, कपट और दुनिया बस रही है, ऐसे मनुष्य सदा अनुभवी महापुरुषों का विरोध करते हैं। कसूर के शहर में गए। लोगों ने कहा यह कुराहिया है। इसे शहर में न आने दो। मुलतान गए। वहां बहुत से फकीर थे, उन्होंने दूध का भरा प्याला भेजा। मतलब यह था कि यहां आगे ही बहुत से फकीर हैं। उन्होंने उस पर चमेली का फूल रख दिया कि मैं सबको खुशबू देने आया हूं। ऐसे महात्मा जब भी आते हैं, संसार को खुशबू दे जाते हैं, जो गाली दे उसे भी। अनुभवी अनुभवी होता है। उसकी लगन हर समय परमात्मा से लगी रहती है। संसारी मनुष्य दुख के समय प्रभु को याद करता है। दुख टला तो प्रभु भूल गया।

(27) सुख दुख पुरब जन्म के किए, सो जाणै जिन दाते दिए॥

दुख, सुख पुर्बले कर्मों का फल है। हमें याद नहीं कि किस कर्म की सज़ा मिल रही है मगर वह जिसने दंड दिया है वह तो जानता है। उसके हुक्म की कलम हमारे कर्मों के अनुसार चलती है।

(28) किस ऊं दोष दे तू प्राणी सब अपणा किया करारा हे॥

ये संसार के भोग अपने ही कर्मों के फल हैं। एक चीज़ है जो सज़ा की कठोरता को नर्म कर देती है, वह है प्रभु का नाम। उसकी याद सूली को कांटा बना देती है। अनुभवी महापुरुष के चरणों में बैठकर नाम जपोगे तो दुख भी सुख हो जाएंगे। तवज्जो के उभार से आत्मा बलवान हो जाए तो दुख दुख नहीं रहता। पाकिस्तान से कटे-पिटे लोग आए। लाख तसल्ली (ढाढस) दी जाती मगर उन्हें धैर्य कहां। हज़ूर दो शब्द कहते, "घबरा मत।" दिलों पर मरहम लग जाती। अनुभवी महात्मा के शब्दों में विशेष प्रभाव होता है।

(29) हौमैं ममता करदा आया, आसा मनसा बंध चलाया॥

आशा से बंधा हुआ यह बार-बार जन्म मरण में आता है।

(30) मेरी मेरी करत क्या ले चाले बिख लादे छार बिकारा हे॥

यह मेरा है, यह भी मेरा है। यह कहके क्या ले चले हो संसार से?

माया की लहरों के बोझ-के-बोझ लाद ले चले। जहां आसा तहां वासा। बार-बार यहीं आओगे।

(31) हर की भगत करो जन भाई, अकत्थ कथो मन मनहि समाई॥

यह सब ब्यान करके अंत में उपदेश देते हैं कि ऐ भाई, हरि की भक्ति करो। हज़ूर फरमाते थे जो जीते जी पंडित है, मर कर भी पंडित है। जीते जी मुक्ति न हुई, अंतर में नाम का रस न आया तो मर के मुक्ति कहां?

सो फरमाते हैं कि समर्थ पुरुष की संगत में बैठ कर भक्ति करो। किसकी? हरि की भक्ति। वह भक्ति क्या है? अकथ कथा, शब्द, नाम, वह ध्वनि जो अंतर में हो रही है, उसमें आत्मा को लगाओ। उससे क्या लाभ होगा? मन, मन में समा जाएगा। पिंड से ऊपर पिंडी मन, फिर अंडी मन अंड में, ब्रह्मांडी ब्राह्मांड में। आत्मा के सारे गिलाफ उतर जाएं तो वह प्रभु को पाने के योग्य हो जाएगी। यह गति गुरुमुख की है। ध्वनि खींचेगी और वहां ले जाएगी जहां से वह आ रही है मगर यह कब होगा, जब बाहर से हटोगे।

(32) उठ चलता ठाक रखो घर अपणे दुख काटे काटणहारा हे॥

अब जहां से विषय आरम्भ करते हैं वहीं समाप्त भी करते हैं। फरमाते हैं: मन तो बाहर भटक रहा है उसे अंतर में रोको।

(33) हर गुर पूरे की ओट पराती, गुरुमुख हर लिव गुरुमुख जाती॥

यह सामान कहां से मिलेगा, पूरे गुरु से। जो पिंड के ऊपर नहीं आया वह लाख ज्ञान ध्यान छांटे तुम्हें पिंड से ऊपर नहीं ला सकता। पूरे गुरु की पहचान क्या है? वह सामने बिठाकर अनुभव कराता है। कानपुर में एक भाई ने बाणी सुनी। कहने लगे विषय तो साफ समझ में आता है पर इतनी जल्दी यह सब हो कैसे सकता है? जब नाम लिया तो समझ आ गई। यह संशय कब तक है? जब तक अंतर में रमे राम से Contact (संपर्क) नहीं मिलता। अब गुरु नानक साहब ज़ोरदार शब्दों में याद कराते हैं कि ऐसे गुरु के पास जाओ जो 'हरि' गुरु है। जो हरि का रूप हो चुका है। जो Polarised God है, जिसके विषय में कहा है:

हर जियो नाम परयो रामदास॥

ऐसे अनुभवी पुरुष कम मिलते हैं मगर बीज नाश नहीं।

(34) नानक राम नाम मत उत्तम हर बख्शे पार उतारा है॥

कहते हैं कि जो रमा हुआ नाम है, उसके साथ लगना सबसे बड़ी मत, सबसे ऊँची अक्ल है। जिसे हरि बख्शना चाहता है उसे पूर्ण पुरुष से मिला देता है। परमात्मा का पाना क्या है? बाहर से हटना और अंतर में लगना। अंतर लगने का सामान संसार में कामिल (अनुभवी) पुरुष के पास है। वह नाम से जोड़ता है जो निज घर जाने का जरिया है। श्री गुरु नानक साहब का यह उपदेश किसी खास समाज, जाति के लिए नहीं। यह उपदेश सारी मनुष्य जाती के लिए है। आत्मविद्या की साईंस सबके लिए है। किसी भी समाज में रहो, उस समाज के असूलों का पालन करते हुए आत्म विद्या को ग्रहण करने, अपने आपको जानने और परमात्मा को पाने का यत्न करो जो मनुष्य जीवन का आदर्श है। यही संतों का उपदेश है जो सारी दुनिया के लिए एक है।

◆◆◆◆◆